प्रातः क्लास 2/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझा रहे हैं। एक है रूहानी बाप की मत। दूसरी है आसुरी मत। आसुरी मत बाप की नहीं कहेंगे। रावण को बाप तो नहीं कहेंगे ना। बाप मिलते ही हैं सम्पत्ति के लिए। रावण से तो और ही सम्पत्ति कम होती जाती है। वह है ही रावण की आसुरी मत। अभी तुम बच्चों को मिल रही है ईश्वरीय मत। कितना रात-दिन का फर्क है। बुद्धि में आता है ईश्वरीय मत से दैवीगुण धारण करते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही बाप द्वारा सुनते हो। और कोई को यह मालूम नहीं पड़ता है, ईश्वरीय मत कहाँ ले जाती है और आसुरी मत कहाँ ले जाती है। यह तुम ही जानते हो। आसुरी मत जबसे मिलती है, तुम नीचे गिरते ही आये हो। नई दुनिया से थोड़ा-2 गिरते हो। गिरना कैसे होता है, फिर चढ़ना कैसे होता है, यह भी तुम बच्चे समझ गए हो। अभी श्रीमत तुम बच्चों को मिलती है फिर से श्रेष्ठ बनने लिए। तुम यहाँ श्रेष्ठ बनने लिए आये हो। तुम जानते हो हम श्रेष्ठ मत फिर कैसे पावेंगे। अपनी ऊँच पद तुम अनेक बार श्रीमत से पाए हो, फिर पुनर्जन्म लेते-2 नीचे गिरते आये हो। फिर एक ही बार चढ़ते हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो होते ही हैं। बाप समझते हैं टाइम लगता है। पुरुषोत्तम संगमयुग का भी टाइम है ना पूरा एक्युरेट। ड्रामा बड़ा ही एक्युरेट चलता है और यह है बहुत वण्डरफुल। बच्चों को समझने में तो बड़ा सहज आता है। बाप को याद करना है और वर्सा लेना है, बस। परन्तु; पुरुषार्थ करते हैं तो कइयों को कठिन भी लगती है। इतना ऊँच ते ऊँच पद पाना कोई सहज थोड़े ही हो सकता है। है बहुत सहज बाप की याद और सहज वर्सा बाप का। सेकण्ड की बात है। फिर पुरुषार्थ करने लगते हैं तो माया के विघ्न भी पड़ते हैं। रावण पर जीत पाना होता है। सारी सृष्टि पी(पर) इसी रावण का राज्य है। अभी तुम समझते हो हम योगबल से रावण पर हर कल्प जीत पहनते आए हैं। अभी पहनते भी हैं। रावण पर जीत पहनाने वाला कोई साधु-संत-महात्मा नहीं है। सिखलाने वाला है बेहद का बाप। भक्तिमार्ग में भी तुम बाबा बाबा कहते आए हो; परन्तु पहले बाप को नहीं जानते थे। आत्मा को जानते थे। कहते थे भृकुटि के बीच चमकता है सितारा। आत्मा को जानते हुए भी बाप को नहीं जानते थे। कैसा विचित्र ड्रामा है! कहते भी थे– हे! परमपिता परमात्मा। याद करते थे, फिर भी जानते नहीं थे। न आत्मा के आक्युपेशन को, न परमात्मा के आक्युपेशन को पूरा जानते थे। बाप ही खुद आकर समझाते हैं। बाप बिगर कब कोई रियलाइज़ करा न सके। कोई का पार्ट ही नहीं। गायन भी है ईश्वरीय सम्प्रदाय और आसुरी सम्प्रदाय। यूँ तो सभी आत्माएँ ईश्वरीय सम्प्रदाय हैं ही। फिर पार्ट बजाने लिए ईश्वरीय सम्प्रदाय से दैवी सम्प्रदाय बन पार्ट बजाते हो। यह है बहुत सहज; परन्तु यह बातें याद रहें, इसमें ही माया विघ्न डालती है। भुला देती है। बाप कहते हैं– नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद करते-2 जब ड्रामा का अन्त होगा अर्थात पुरानी दुनिया का अन्त होगा, तब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन हो ही जावेगी। सूर्यवंशी-चंद्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। शास्त्रों से यह बातें कोई समझ न सके। गीता आदि तो इसने भी बहुत पढ़ी है। अभी बाप कहते हैं यह भी भक्तिमार्ग का भूसा है। इनकी कोई वैल्यु नहीं। लकड़ी की भुस्सी की वैल्यु क्या होगी? तो भक्तिमार्ग की कोई वैल्यु नहीं; परन्तु जब भक्तिमार्ग है तो वही चलता है। भक्ति को छोड़ते ही नहीं। बाप कितना छुड़ाने कोशिश करते हैं; परन्तु छोड़ते ही नहीं। भक्ति में बहुत किचड़ा चलता है। आधा कल्प से उस पर हिरे हुए हैं, तो जल्दी थोड़े ही छोड़ेंगे। नम्बरवार ही छूटते हैं। सभी का नहीं छूट सकता। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। धंधा आदि भी कोई का रॉयल होता है, कोई का छी-छी धंधा आदि होता है। शराब बेचते हैं। यह धंधा बहुत खराब है। शराब सभी विकारों को खैंचते हैं। किसको शराबी बनाना, यह धंधा अच्छा नहीं। बाप राय देंगे युक्ति से यह धंधा आदि चेंज कर लो, नहीं तो ऊँच पद पा न सकेंगे। बाप समझाते हैं इन सभी धंधों में है नुकसान, बिगर अविनाशी ज्ञान रत्नों के धंधे के। भल जवाहरात का धंधा आदि करते थे; परन्तु फायदा तो नहीं हुआ ना। करके लखपति बने। इस धंधे से क्या बनते हो! बाबा पत्रों में भी हमेशा लिखते हैं, पद्मापदम भाग्यशाली सो भी 21 जन्मों के लिए बनते हो।

तुम भी समझते हो बाबा कहते बिल्कुल ठीक है। हम सो यह देवता थे। फिर पीछे चक्र लगाते-2 नीचे आते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को भी जान गए हो। नॉलेज तो बाप द्वारा मिली है; परन्तु फिर दैवीगुण भी धारण करनी है। अपनी जाँच करनी है, हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं है। यह बाबा भी जानते हैं हमने यह अपना शरीर रूपी मकान किराया पर दिया है। यह मकान है ना, इसमें आत्मा रहती है। हमको बहुत फ़ख़ुर रहता है। भगवान को हमने किराया पर मकान दिया है। ड्रामा प्लैन अनुसार उनको और कोई मकान लेना ही नहीं है। कल्प-2 यही मकान लेना पड़ता है। इनको तो खुशी होती है ना; परन्तु फिर भी हंगामा कितना मचा हुआ है। यह बाबा कब हँसी-कुड़ी में बाबा को कहते भी हैं आपका रथ बना तो हमको इतनी गाली खानी पड़ी है। बाप कहते हैं सबसे जास्ती गाली तो मुझे मिली है। अभी तुम्हारी बारी है। ब्रह्मा को कब गाली मिली नहीं है। अभी बारी आयी है। रथ दिया है यह तो समझते हैं ना। तो ज़रूर बाप की मदद भी मिलेगी, फिर भी बाबा कहते हैं बाप को निरंतर याद करना, इसमें मेरे से तुम जास्ती तीखा जाते हो; क्योंकि इनके ऊपर तो मामला बहुत है ना। भल ड्रामा कह छोड़ देते हैं फिर भी कुछ लहस ज़रूर आती है। यह बिचारी बहुत अच्छी सर्विस करती थी। यह खराब हो गई। कितनी डिससर्विस होती है। ऐसा-2 काम करते हैं जो लहस आ जाती है। यह नहीं समझते, यह तो ड्रामा बना हुआ है। यह फिर बाद में ख्याल आता है, यह तो ड्रामा में नूँध है ना। माया अवस्था को बिगाड़ देती है, तो बहुत डिस-सर्विस हो जाती है। कितना अबलाओं आदि पर अत्याचार हो जाते हैं। आर्यसमाजी आदि तो हमारे बच्चे नहीं हैं ना। यहाँ तो खुद के बच्चे ही कितनी डिस-सर्विस करते हैं। उल्टा-सुल्टा बकने लग पड़ते हैं। बाप ने समझाया है बकना सीखना हो तो व्यास भगवान से सीखो। कितनी बकवाद लिख दी है। है तो ड्रामा; परन्तु क्या बैठ लिखा है और फिर नाम कितना बड़ा रखा है। व्यास भगवान! भगवान को तो कोई शास्त्र आदि पढ़ने का है नहीं। भगवान तो बैठ समझाते हैं। नाम रख दिया है गीता। श्रीकृष्ण भगवानुवाच है नहीं। अभी तुम जानते हो भगवान क्या सुनाते हैं। कोई शास्त्र आदि नहीं सुनाते। व्यास ने क्या-2 बैठ बनाई है। यह भक्ति-मार्ग के शास्त्र आदि कितना गिराने वाले हैं। वण्डर लगता है, यह बनते ही क्यों हैं। हाँ, यह भी ड्रामा में नूँध है। इसको कहेंगे भावी ड्रामा की जो इतने शास्त्र आदि बनते हैं। शास्त्रों के बिगर भक्ति कैसे हो सकती। यह भी बननी है हैं। अभी हम श्रीमत पर कितना श्रेष्ठ बनते हैं। आसुरी मत से कितना भ्रष्ट बने हैं। टाइम तो लगता है ना। माया की युद्ध चलती रहेगी। तुम्हारी विजय तो ज़रूर होनी ही है। यह तुम भी समझते हो शान्तिधाम-सुखधाम पर हम विजय पहन रहे हैं। कल्प-2 हम विजय पाते आए हैं। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही स्थापना और विनाश होती है। यह सारी डिटैल में, तुम बच्चों की बुद्धि में है। बरोबर बाप हमारे द्वारा स्थापना करा रहे हैं। फिर हम ही राज्य करेंगे। बाबा को थैंक्स भी नहीं देंगे। बाप कहते हैं यह तो ड्रामा में नूँध है। मैं भी इस ड्रामा के अन्दर पार्टधारी हूँ। ड्रामा में सभी का पार्ट नुँधा हुआ है। शिवबाबा का भी पार्ट है। हमारा भी पार्ट है। थैंक्स देने की बात नहीं। शिवबाबा कहते हैं मैं तुमको श्रीमत दे रास्ता बताता हूँ। और कोई बता न सके। जो भी आए, बोल(ी)– सतोप्रधान नई दुनिया स्वर्ग था ना। इस पुरानी दुनिया को तमोप्रधान कहा जाता है, फिर सतोप्रधान बनना है। हम भी सतोप्रधान बनने लिए दैवीगुण धारण करते हैं। बाप को याद करना है। मंत्र ही यह है। मन्मनाभव, मद्याजीभव, बस। यह भी बताते हैं। मैं सुप्रीम गुरु हूँ। वह है गुरु। मैं तुमको इतना ऊँच ले जाता हूँ, फिर तुमको नीचे कौन ले आते हैं? अनेकानेक गुरु। टू मैनी कुक्स(क्वींइस)..... भारत में गुरु कितने ढेर हैं। हरेक स्त्री का पति गुरु। कहते हैं मैं तुम्हारा गुरु, ईश्वर, सभी कुछ हूँ, फिर तुम बाहर मंदिरों आदि में क्यों जाते हो? यह यहाँ के ब्राह्मण लोग सिखलाते हैं। सतयुग में ऐसे कोई नहीं कहते, न कोई ब्राह्मण आदि वहाँ होता है। गुरुलोग क्या-2 बैठ सिखलाते हैं। कितना नॉनसेंस बुद्धि बना देते हैं। यह भी तुम अभी समझते हो। मनुष्य श्री-श्री 108

जगतगुरु का टाइटल देते रहते हैं; परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते। इतने जगद्गुरु हो कैसे सकते? जगद्गुरु तो तुम ठहरे, जो याद की यात्रा से सारी सृष्टि को श्रेष्ठ सद्गति में पहुँचाते हो। फिर जगद्गुरु एक को कहेंगे, जो तुमको भी श्रीमत देते हैं। तुम जानते हो हर 5000 वर्ष हमको यह श्रीमत मिलती है। चक्र फिरता रहता है। आज पुरानी दुनिया है, कल नई दुनिया। इस चक्र को समझना भी बहुत सहज है; परन्तु यह भी याद रहे, जो कोई को समझा सकें। यह भी भूल जाते हैं। कोई गिरते हैं, तो फिर ज्ञान आदि सभी खत्म हो जाता है। काया–कला ही माया ले जाती है। सभी कला निकाल कला रहित कर देती है। विकार में ऐसे फँस जाते हैं, बात मत पूछो। अभी तुमको सारा चक्र याद है, हम जन्म-जन्मांतर वैश्यालय में रहे हैं। हज़ारों पाप करते आए हैं। सभी के आगे कहते हैं जन्म-जन्मांतर के हम पापी हैं। हम ही पहले पुण्यात्मा थे, फिर पापात्मा बने। अभी फिर पुण्यात्मा बनते हो। यह तुम बच्चों को नॉलेज मिल रही है। तुम फिर औरों को दे आप समान बनाते हो। गृहस्थ व्यवहार में रहने से फर्क तो रहता है ना। वह इतना नहीं समझा सकते हैं, जितना तुम; परन्तु सभी तो नहीं छोड़ सकते। बाप खुद कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमलफूल समान बनना है। सभी छोड़कर आवें, तो इतने सभी बैठेंगे कहाँ? सन्यासी तो जाकर जंगल में रहते थे। अभी वह भी अन्दर घुसे हैं। तमोप्रधान दुनिया में आकर झूठी काम करते रहते हैं। नहीं तो सन्यासियों आदि को शास्त्र आदि पढ़ने, भक्ति करने का भी हक नहीं। भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग तुम्हारे लिए हैं। वह न भक्ति करते हैं, न उनको ज्ञान मिल सकता। उनका भगवान ही अपना है। उन्हों का व्यास भगवान है। तुम्हारा तो वह भगवान नहीं है। बाप तो नॉलेजफुल है। वह कुछ भी शास्त्र आदि पढ़ते नहीं। यह शास्त्र आदि पढ़ा था। मेरे लिए तो कहते हैं गॉड फादर इज़ नॉलेजफुल। यह भी जानते नहीं हैं कि बाप में क्या नॉलेज है। अभी तुमको सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। तुम जानते हो यह भक्तिमार्ग के शास्त्र आदि भी अनादि हैं। भक्ति में यह शास्त्र आदि भी ज़रूर निकलनी ही हैं। कहते हैं पहाड़ टूट गया, फिर बनेगा कैसे? परन्तु; यह तो ड्रामा है ना। शास्त्र आदि सभी खत्म हो जाते हैं। फिर अपने समय पर वही बनते हैं। व्यास भगवान ने कब बनाया, कह सकेंगे? तुम कहेंगे जब भक्ति शुरू हुई तब उसने शास्त्र बनाई। हम पहले-2 शिव की पूजा करते हैं, वह भी शास्त्रों में होगा ना, शिव की भक्ति कैसे की जाती है। कितने श्लोक आदि गाते हैं। तुम सिर्फ याद करते हो। शिवबाबा ज्ञान का सागर है। जानते हो अभी हमको वह ज्ञान दे रहे हैं। बाप ने तुमको समझाया है, यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। शास्त्रों में इतना लम्बा गपोड़ा लगा दिया है, तो(जो) कब स्मृति में आ भी न सके। तो बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए, बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। गाया भी जाता है स्टूडेंट लाइफ इज़ दी बेस्ट लाइफ। भगवानुवाच, मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। और कोई शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। ऊँच ते ऊँच प्राप्ति है ही यह। डबल सिरताज बनाता हूँ। और कोई शास्त्रों में यह बातें थोड़े ही हैं। ग्रंथ ही भारत में हैं। अभी वास्तव में नानक को भी तुम गुरु नहीं कह सकते। गुरु तो एक ही है जो सर्व की सद्गति करते हैं। भल स्थापना करने वाले को गुरु कह सकते हैं; परन्तु गुरु वह, जो सद्गति दे। यह तो अपने पिछाड़ी सभी को पार्ट में ले आते हैं। वापस ले जाने लिए तो रास्ता बताते ही नहीं। बारात तो शिव की गाई हुई है। और कोई गुरु की नहीं। मनुष्यों ने फिर शिव-शंकर को मिला दिया है। कहाँ वह सूक्ष्मवतन वासी, वह मूलवतन वासी। दोनों एक हो कैसे सकते? यह भी भक्तिमार्ग में लिख दिया है, शंकर थोड़े ही कहेंगे, मारो। यह तो नाममात्र कह दिया है। यह तो तुम जानते हो विनाश कैसे होगा। बाकी शंकर क्या करते हैं। कैसी-2 बातें शास्त्रों में लिख दी हैं। शिव रहता ही है परमधाम में। शंकर है सूक्ष्मवतन में। दोनों एक कैसे हो सकते? ब्र॰वि॰शं॰ तीन बच्चे ठहरे ना। ब्रह्मा पर भी तुम समझा सकते हो। इनको एडॉप्ट किया है। यह तो शिवबाबा का बच्चा ठहरा ना। ऊँच ते ऊँच बाप। बाकी यह है उनकी रचना। कितनी यह समझने की बातें हैं। बाप बैठ समझाते हैं मैं इनको एडॉप्ट

करता हूँ। यह ब्रह्मा फिर पुरुषार्थ से यह बनते हैं। कम्बाइंड चित्र तो कोई बन सके। दो मिलकर डांस करते हैं ना। (उदयशंकर के डांस का मिसाल) तुम बहुत कुछ समझा सकते हो; परन्तु वह भी तीर तब लगे जब कर्मातीत अवस्था हो। बाबा का कितना तीर लगता है। कहते हैं ज़रूर हम ऐसा बन ही जावेंगे। जितना सुनते जावेंगे, सुधरते जावेंगे। सर्विस वृद्धि को पाती रहेगी। थोड़ा-2 तुम्हारा प्रभाव निकलता रहेगा। फिर ढेर हो जावेंगे। बहुत प्रभाव निकलेगा। बाकी मुख्य है बाप की याद। इसमें ही माया के विघ्न पड़ते हैं। बाप की याद नहीं तो चक्र भी फिरा न सकेंगे। चक्र भी फिराते रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जाए; परन्तु बाप की याद से ही यह चक्र याद आता है। बाप को भूलते हैं तो चक्र आदि को भी भूल जाते हैं। तब बाप कहते हैं यह सारा ज्ञान बुद्धि में रखो। कोई भी आए, उनको समझाना है। तुम्हारी बुद्धि में सभी जमा है तब सारा ज्ञान सुनाते हो। बाबा तो तुमको आस्ते-2 पढ़ाते आए हैं। पहले थोड़े ही यह म्युज़ियम आदि थी। चित्र भी कितने ढेर दिन-प्रतिदिन बनते जाते हैं। अभी तुम बच्चों को अच्छी रीत समझकर, फिर समझाना भी है। बाप को याद करें, तो जौहर भी भरे। मनुष्य को मारने लिए तीर होते हैं ना। तीर में जहर होता है तब मनुष्य मर जाते हैं। जहर न होगा तो ज़रूर ज़ख़्म होगा। इसमें तो है योगबल की बात। योगबल से तुमको यह शरीर छोड़कर जाना है। तुम्हारा यह है प्रवृत्तिमार्ग। शास्त्र भी प्रवृत्तिमार्ग की है। सन्यासियों का निवृत्तिमार्ग ही अलग है। उन्हों को तो ब्रह्म में लीन होना है। वह मोक्ष को मानते हैं। बाप कहते हैं मोक्ष होता ही नहीं। यह तो सृष्टि का चक्र है, जो फिरता रहता है। बाप रोज़-2 बच्चों को रिफ्रेश करते रहते हैं। बाप को याद करो। बाप को याद करेंगे तो फिर सृष्टिचक्र भी याद पड़ेगा। बड़े-2 ऋषि-मुनि तो नेती-2 करते गए। अर्थात हम नहीं जानते हैं। कोई भी शास्त्र में यह नॉलेज है नहीं, सिवाय गीता के। गीता में भी है इस राजयोग से तुम राजाओं का भी राजा बनेंगे। वह लोग तो सिर्फ शास्त्र आदि पढ़कर सुनाते हैं और कमाते हैं। करोड़पति बन जाते हैं। टीचर पढ़ाने वाले थोड़े ही इतने साहुकार हो सकते। शास्त्र बनाने वाले कितने करोड़पति हो जाते हैं। चिनमयानंद को कितना मिलता होगा। तुम्हारा तो यह है अपना ब्राह्मण कुल। बाप को भी तुम जानते हो और रचना के आदि-मध्य-अन्त को भी तुम जानते हो और पवित्र बनते हो। पतित-पावन बाप को ही सभी याद करते हैं कि हम सभी को पावन बनाओ। सद्गति करने वाला भी एक ही बाप है। तुम अर्थ सहित समझाते हो कि एक शिवबाबा को याद करो, वही ऊँच ते ऊँच है। उनके लिए ही अंगुली से सभी इशारा करते हैं। उनको भी याद करते हैं। अभी तुम बच्चों को मालूम है, ज्ञान का सागर बाप आया हुआ है। कहते हैं अपन को आत्मा समझो। मैं तुम आत्माओं का बाप हूँ। मैं अभी आया हूँ तुमको पढ़ाने लिए। यह नॉलेज अभी ही तुमको मिलती है। फिर कल्प बाद रिपीट होगी। कितना अच्छी रीत समझाते हैं। म्युज़ियम बनाते रहते हैं। कॉलेज आदि तो खुलते रहते हैं। कन्याएँ बहुत हिम्मत करती हैं आप समान बनाने लिए। कुमारों आदि का इकट्ठा नहीं खोल सकते; क्योंकि वह अवस्था अजन नहीं है। आग और कपूस दोनों इकट्ठे रह न सके। अच्छे-2 शुरू-2 के आयु(ए) हुए भी बिगड़ पड़ते हैं। जिन्होंने बहुतों को नॉलेज दी उन्हों का भी माया माथा खराब कर देती। दूसरों के (सर्विस) बदली और ही डिस-सर्विस करते कर देते हैं। माया नाक से पूरा पकड़ लेती है। माया रूपी ग्राह, गज को नाक से पकड़ लेती है। फिर जब बाप के सम्मुख आवें तो आस्ते-2 छुड़ाया जाये। कोई को तो माया बिल्कुल ही हप कर लेती है। कोई को फिर छुड़ाने की युक्ति रची जाती है। शास्त्रों में ठीक बात है कि गज को ग्राह ने खाया। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

देहरादून का सेन्टर बदली हुआ है, जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं :–

Brahma Kumaris
67/8, Rajpur Road,
DEHRADUN